।। श्री महेश्वराय नमः ।।

माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति–प्रकाश

सूर्यवंशी राजाओं में चौहान जाति के खडगल सेन राजा सेन राजा खण्डेला नगर में राज्य करते थे। वह बड़े दयालु आर न्याय प्रिय थे। उनके राज्य में प्रजा बड़े सुख से रहती थी। मृग और मृगराज एक घाट पानी पीते थे। राजा को हमेशा एक यही चिन्ता रहती थी कि उनके एक भी पुत्र नीं था। एक समय राजा ने बड़े आदर भाव से जगत् गुरू ब्राह्मणों को अपने यहाँ बुलाकर उनका बड़ा सत्कार किया। राजा की सेवा भक्ति से ब्राह्मण लोग बड़े संतुष्ट हुए। ब्राह्मणों ने राजा को वर माँगने को कहा। तब राजा ने कहा कि मेरे पुत्र नहीं है, कृपा करके मेरी इच्छा पूरी करायें। तब ब्राह्मणों ने राजा से कहा कि यदि आप शिव की उपासना करोगे तो आपको एक होनहार, पराक्रमी और चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त होगा परन्तु उसे सोहल वर्ष तक उत्तर दिशा में मत जाने देना और जो उत्तर दिशा में सूर्य कुण्ड है, उसमें स्नान मत करने देना। यदि वह ब्राह्मणों से द्वेष नहीं करेगा तो चक्रवर्ती राज करेगा, अन्यथा इसी देह से पुर्नजन्म लेगा। इस प्रकार ब्राह्मणों का आशीर्वाद प्राप्त कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। राजा ने उनको वस्त्र आभूषण, गाय आदि देकर प्रसन्नचित्त विदा किया।

राजा के चौबीस रानियाँ थी। कुछ समय बाद उनमें से एक रानी चम्पावती के पुत्र जन्म हुआ। राजा ने बड़ा आन्नद मनाया और नवजात शिशु का नाम सुजान कुँवर रखा। सात वर्ष का होते ही राजकुमार घोड़े पर चढ़ना, शस्त्र चलाना सीख गया। जब वह बारह वर्ष का हुआ तो शत्रु लोग इससे डरने लगे। वह चौदह विद्या पढ़कर होशियार हो गया। राजा उसके काम को देखकर संतुष्ट हुए। राजा ने इस बात का ध्यान रखा कि सुजान कुँवर उत्तर दिशा में न जाने पाये।

इसी समय में एक बौद्ध (जैन) साधु ने आकर राजपुत्र को जैन धर्म का उपदेश देकर शिवमत के विरूद्ध कर दिया। ब्राह्मणों ने नाना प्रकार के दोष वर्णन किये और 14 वर्ष की उम्र में राजकुमार शिवमत के विरूद्ध होगर जैन धर्म मानने लगा। वह देव पूजा नहीं होने देता था। उसने तीनों दिशाओं पूर्व, पश्चिम, दक्षिण में धूम कर जैन मत का प्रचार किया ब्राह्मणों को बड़ा दुःख दिया, उनके यज्ञोपवीत तोड़े गये। यज्ञ करना बंद हो गया। राजा के भय से राजकुमार उत्तर दिशा में नहीं जाता था। परन्तु प्रारब्ध रेखा कौन मिटावें। राजकुमार अपने 72 उमरावों को साथ लेकर उत्तर दिखा में सूर्य कुण्ड पर चला ही गया जहाँ पर छः रिषेश्वर, परासुर गौतम आदि को यज्ञ करता देख बड़ा क्रोधित हुआ। राजकुमार की आज्ञा से उमरावों ने इन ब्राह्मणों का बड़ा कष्ट दिया। यज्ञ की सब सामग्री नष्ट कर दी। इन कुकृत्यों पर ब्राह्मणों ने शाप दिया कि तुम सब इसी समय जड़ बुद्धि पाषाणवत् हो जाओ। तब 72 उमराव और राजकुमार घोड़ों सहित जड़ बुद्धि पाषाणवत् हो गये। राजकुमार के शाप ग्रसित होने की खबर चारों तरफ फैल गई।

राजा और नगर निवासी यह समाचार सुनकर बड़े दुःखी हुए। महाराज खडगल सेन ने इसी दुःख में प्राण तक त्याग दिये। इनके साथ इनकी सोलह रानियाँ सती हो गई। शेष आठ रानियाँ रावले में रहीं। अब राज्य की रक्षा करने वाला कोई नहीं रहा तो आस–पास के राजाओं ने हमले करके राज्य को छिन्न–भिन्न कर दिया और अपना जीता हुआ भाग अपने–अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। इधर राजकुमार की रानी बहत्तर उमरावों की पत्नियों सहित रूदन करती हुई उन्हीं ब्राह्मणों की शरण में गई जिन्होंने इनके पतियों को शाप दिया था। ये उन ब्राह्मणों के चरणों में गिर पड़ीं, रोई और नम्रता से प्रार्थना करने लगी। यह हल देखकर ब्राह्मणों को उन पर दया आई। उन्होंने धर्म उपदेश दिया और कहा कि हम शाप दे सकते हैं लेकिन शाप–मुक्त करना हमारा काम नहीं है। ब्राह्मणों ने उनको सलाह दी कि पास ही गुफा में जाकर शिव की आराधना करो। तुम्हारी आराधना से प्रसन्न होकर शंकर और पार्वती ही इन लोगों को शाप से छुटकारा करा सकेंगे। सब स्त्रियाँ गुफा में गई और वहीं भक्तिपूर्वक शिवजी की साधना करने लगी।

कुछ समय बाद भगवान शिव और पार्वती घूमते–घूमते उधर ही आ निकले जहाँ राजकुमार अपने बहत्तर उमरावों और घोड़े सहित पत्थर के होकर पड़े थे। भगवान शिवजी से पार्वती जी ने इन पत्थर की मूत्तियों के होने के बारे में पूछा। तब शिवजी ने इन मूर्त्तियों का पूर्ण इतिहास पार्वतीजी को समझाया।

इसी समय राजकुमार की रानी व बहत्तर उमरावों की स्त्रियाँ आकर पार्वती जी के चरणों में गिर पड़ीं और अपनी व्यथा प्रकरट करने लगी। पार्वतीजी ने उनके कष्ट से व्यथित होकर शिवजी से इनको शाप मुक्त करने की प्रार्थना की। इस पर महादेव जी ने उनकी मोह निद्रा छुड़ा कर उनको चेतन किया। सब चेतन हो भगवान शिवजी को प्रणाम करने लगे।

राजकुमार जैसे ही अपने होश में आया श्री पार्वतीजी के स्वरूप से लुभायमान हो गया। यह देख कर पार्वतीजी ने उसे शाप दिया कि हे कुकर्मी तू भीख मांग कर खायेगा और तेरे वंश वाले हमेशा भीख मांगते रहेंगे। वे ही आगे चलकर **'जागा'** के नाम से विदित हुए।

बहत्तर उमारा बोले–हे भगवान! अब हमारे घर बार तो नहीं रहे, हम क्या करें। तब शिवजी ने कहा 'तुमने पूर्वकाल में क्षत्रिय होकर स्वधर्म त्याग दिया, पर इसी कारण तुम क्षत्रिय नह होगर अब वैश्य पद के अधिकारी होंगे। जाकर सूर्यकुण्ड में स्नान करो।' सूर्य कुण्ड में स्नान करते ही तलवार से लेखनी, भालों की डांडी और ढ़ालों से तराजू बन गई और वे वैश्य बन गये। भगवान महेश के द्वारा प्रतिबोध देने के कारण ये बहत्तर उमराव **'माहेश्वरी वैश्य'** कहलाये।

जब यह खबर ब्राह्मणों को मिली कि महादेव जी ने बहत्तर उमरावों को शाप मुक्त किया है तो उन्होंने आकर शिवजी से प्रार्थना की कि हे भगवान आपने इनकों शाप मुक्त तो कर दिया लेकिन हमारा यज्ञ कैसे पूरा होगा? तब शंकर ने उन उमरावों को उपदेश दिया कि आज से ये ऋषि तुम्हारे गुरू हुए। इन्हें तुम अपना गुरू माना करना। शिवजी ने ब्राह्मणों से कहा कि इनके पास देने को इस समय कुछ नहीं है परन्तु इनके घर में मंगल उत्सव होगा तब यथाशिक्ति द्रव्य दिये जायेंगे, तुम इनको स्वधर्म में चलने की शिक्षा दो। ऐस वर देकर शंकर पार्वती सहित वहाँ से अन्तर्धान हो गये। ब्राह्मणों ने इनको वैश्य धर्म धारण कराया। तब बहत्तर उमाराव इन छः रिषेश्वरों के चरणों में गिर पड़े। बहत्तर उमरावों में से एक–एक ऋषि के बारह–बारह शिष्य हुए। वही अब यजमान कहे जाते हैं। कुछ काल के पीछे खण्डेला छोड़कर यह सब डीडवाना आ बसे। वे बहत्तर उमराव खांप के डीड माहेश्वरी कहलाये।

यही दिन जेठ सुदी नवमी का दिन था, जब माहेश्वरी वैश्य कुल की उत्पत्ति हुई। दिन–प्रतिदिन यह वंश बढ़ने लगा।

सेवा–त्याग–सदाचार, माहेश्वरी समाज का अधार!

राष्ट्रीय स्तर पर माहेश्वरी समाज का बोध चिह्न अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा ने चित्तैड़गढ़ की बैठक में एक सुन्दर बोधचिह्न स्वीकृत किया है। त्याग और पराक्रम की भूमि भगवान एकलिंग का सान्निध्य एवं संस्कृति संरक्षक चित्तौड़ की साक्षी से यह बोधचिह्न अंगीकृत किया गया, इस लिए इसमें एक दिव्य शक्ति अंतभूर्त हुई है। बोधचिह्न का दर्शन अत्यन्त मंगल है। देखते ही अनेक प्रेरक भाव मन मेंप्रस्फुटित होते हैं। इसमें श्वेत कमलपुष्प के कोमल आसन पर भगवान महेश संवले लिंग में विराजमान है। भगवान शिव हमारे समाज के निर्माणकर्त हैं। वे हमारे आराध्य हैं। भगवान शिव के पिण्ड का त्रिपुंग, त्रिशूल एवं डमरू शोभा दे रहे हैं। कमल पुष्प नौ पंखुड़ियों वाला है। कमल का पुष्प देवी–देवताओं का अत्यन्त प्रिय पुष्प है। देवी सरस्वती श्वतेपद्मासना है। तो देवी महालक्ष्मी लाल कमल पर विराजमान है। लक्ष्मी के तो दोनों हाथों में कमल होते हैं। भगवान विष्णु के एक हाथ में सुदर्शन तो दूसरे हाथ में कमल रहता है औरब्रह्माजी का दर्शन हमें हमेशा नाभि कमल पर ही होता है। कमल पुष्प की और एक विशेषता है कि यह कीचड़ में खिलता है और जल में रहते हुए भी उससे लिप्त नहीं होता। कहते है कमल की पंखुड़ी तथा पत्ते पर जल का बिन्दु नहीं ठहरता, पानी में रहते हुए भी पानी से अलिप्त, बिल्कुल अनासक्त। यही भाव समाज में काम करते समय हमारा होना चाहिए। हम काम करेंगे, करते रहेंगे लेकिन फल की कोई अपेक्षा न रखते हुए हमें न पद की चाह हो न मान–सम्मान की। कमल का पुष्प मंगल है और अनासक्ति का द्योतक है। कमल पुष्प के नौ पंखुड़ियों के बीच की पंखुडी पर अखिल ब्रह्माण्ड का प्रतीक, सभी मंगल मंत्रों का मूलाधार **''ॐ''** की स्थापना की गयी है। परमात्मा के असंख्य रूप हैं उन सभ रूपों का समावेश ओंकार में हो जाता है।

ॐ सगुण–निर्गुण का समन्वय और एकाक्षर ब्रह्मा भी है। भगवत् गीता में कहा है 'ओमित्येकारक्षंर ब्रह्मा' माहेश्वरी समाज आस्तिक और प्रभुविश्वासी रहा है। उस ईश्वर श्रद्धा का प्रतीक है **ॐ**। शब्दवाह्या **ॐ** के पार्श्वभाग में अखिल ब्रह्माण्ड के नायक भगवान शिव का त्रिपुड, त्रिशूल एवं डमरू के साथ दर्शन होता है। अत्यन्त वैभव सम्पन्न होने पर भी भगवान शिव की सदकी सीमातीत है। वे वैराग्यमूर्ति बनकर भस्म में रमाए रहते है। भस्म का त्रिपुण्ड शिवजी की त्याग वृत्ति का प्रतीक है। त्रिशूल विविध तापों को नष्ट करने वाला एवं दुष्ट प्रवृत्ति का दमन करने वाला है और डमरू बताता है कि उठो जागो और परिवर्तन का डंका बजाओ। समाज मानस को जागृत करके समस्याओं को दूर करो। कमलासन के नीचे त्रिदलय बिल्वपत्र है जो विश्वधर्म को आलोकित करने वाले तीनों गुणों से मंडित है। ये तीन गुण है, **'सेवा–त्याग–सदाचार'**। मानवा जीवन को सार्थक, सफल और सुन्दर बनाने वाले ये तीन गुण हैं। संगठन को सुरक्षित करने वाले ये तीन गुण हैं।

सेवा–सेवा–समाज का बहुत ऋण है जो हर व्यक्ति पर होता है। समाज हमारे लिए जन्म से मृत्यु तक बहुत कुछ करता है। इसलिए समाज में परमात्मा की भवना जैसे उसकी सेवा करने का प्रयास करना चाहिए। मेरे पास कुछ हो अथवा न हो समाज से प्रेम करना समाज की सेवा करना मेरा कर्तव्य है। समाज में अनेक समस्याएँ हैं इन सबको हम नहीं सुलझा सकते हैं, किन्तु निराधार को आधार, वैद्यकिय सेवा, व्यावसायिक सहायता, शिक्षा अथवा संस्कार इनमें अनी क्षमतानुसार योगदान देकर हम समाज की सेवा कर सकते है अपने पास थोड़ा भी अतिरिक्त समय, धन अथवा किसी प्रकार का बल हो तो वह समाज स्वरूप परमात्मा की सेवा में लग जाये, यही सेवा का सर्वोत्तम सदुपयोग है। सेवा से लोगों के मन में अपनेपन के भाव का निर्माण होता है और संगठन सुदृढ़ होता है। उसमें शक्ति आती है।

त्याग–त्याग की महिमा अपरंपार है। त्याग की असाधारण महिमा से हमारे शास्त्र भरे हुए हैं। समाज की उन्नति त्याग के बिना संभव नहीं। हमारे पूर्वज स्वयं सादगीपूर्ण जीवन बिताते थे और परिश्रम से प्रापत की हुई पूंज को समाजोपयोगी कार्यों में लगाकर स्वयं को धन्य मानते थे। इन्हीं विचारों से विद्यालय, अस्पताल, देवमंदिर, धर्मशालएँ, महाविद्यालय, छात्रावास आदि निर्माण हुआ है।

सदाचार–सदाचार से सकजा का उत्थान होता है और अनाचार से पतन होता है। सदाचार से ही लोग आकर्षित होते है। सदाचार का ही आदर सब करते हैं, दुराचार का सर्वत्र अनादर होता है। त्यक्ति–व्यक्ति को सदाचारी बनाना और सदाचारी व्यक्तियों को संगठित करना यही समाजिक उद्धार का मूल मंत्र है। सेवा, त्या, सदाचार का डंका बजाने वाला हमारा यह बोधचिह्न सचमुच बड़ा अर्थपूर्ण है। हमारे इस अलौकिक बोधचिह्न का प्रचार–प्रसार हमें जितना हो अधिकाधिक करना चाहिए। यह गौरवशाली चिह्न है। हर माहेश्वरी व्यक्ति तथा संस्था की यह पहचार है जहाँ–जहाँ हो सके वहाँ इस छपवाइए। घर में दुकार में सर्वत्र लगवाइए। हर उत्सव में हर कार्यक्रम में इसका उपयोग कीजिए।

।। श्री महेश्वराय नमः ।।

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर

परिचय : एक दृष्टि

'श्री माहेश्वरी समाज', जयपुर का विभिन्न समाजों में अपना विशिष्ट स्थान है। अपनी चहुँमुखी गतिविधियों व कार्यकलापों से चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या सांस्कृतिक/शैक्षिक जगत अथवा चिकित्सा क्षेत्र, युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन व महिलाओं में सामाजिक, आर्थिक चेतना व सक्रिय योगदान का कार्य हो, चाहे सामुदायिक भवन निर्माण कार्य हो या वृद्धाश्रम निर्माण कार्य, समाज सेवा के अपने विभिन्न आयामों से श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर न केवल राजस्थान राज्य के ही बल्कि भारतवर्ष के माहेश्वरी एवं अन्य जातीय संगठनों में अपना एक अलग स्थान रखता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : समाज के युवकों की मानसिक, शारीरिक व आर्थिक दशा को उन्नतिशील बनाने व समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने की दृष्टि से पौष शुक्ला 10 सम्वत् 1982 को माहेश्वरी समाज जयपुर का गठन किया गया। माघ शुक्ला 7 (सूर्य सप्तमी) सन् 1925 को समाज का विधिवत् उद्घाटन स्व. सेठ श्री गोविन्द नारायण जी सोमानी (बब्बू सेठ) के कर–कमलों से विद्याधर के रास्तें में किया गया। साथ ही एक रात्रि पाठशाला 3 माह के लिए स्थापित की गई, इस पाठशाला में बच्चों को पढ़ाने का भार स्व.श्री श्याम सुन्दर जी काबरा, स्व.श्री बालचन्द जी कचोलिया, स्व.श्री शिव शंकर जी झंवर ने स्वेच्छा से अपने ऊपर लिया।

तत्पश्चात् पुस्तकालय, व्यायामशाला स्थापित की गई। दस्तकारी का कार्य सिखाने की व्यवस्था के साथ–साथ अन्य सेवा कार्य भी किये गये।

किराये के मकान से समाज की गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने हेतु 28 फरवरी, 1944 को सिंघी जी के रास्ते में पुराना बना हुआ मकान खरीदा गया। पुर्ननिर्माण हेतु भवन का शिलान्यास स्व.श्री सेठ श्री बद्रीनारायण जी लढ्ढ़ा के कर कमलों से 11 जुलाई, 1945 को हुआ। 1946 में भवन तैयार हो गया। वर्तमान से इस भवन में तीन मंजिल बनी हुई है।

इस भवन के पीछे जमीन व मकान 1968–69 में अनाथालय में से समाज ने खरीदा जिसका आर्थिक भार स्व.श्री गणेशनारायण जी अजमेरा ने वहन किया। इस जमीन पर तीन मंजिला भवन बनाकर मुख्य भवन की –अनेक्सी' के रूप में काम लिया जा रहा है।

शनै–शनै समाज क्रियाशील होता गया। सन् 1932 में महेश नवमी का पहला उत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया । 1948 में महेश भगवान की शोभा–यात्रा प्रथम बार निकाली गई।

समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, चिकित्सा के नये आयाम स्थापित किये गये। वार्षिक उत्सव (सूर्य सप्तमी), होली–मिलन समारोह, महेश नवमी महोत्सव, दीपावली स्नेह मिलन, गोठ एवं मेला, परिचय सम्मेलन व सामूहिक विवा आदि आयोजन बड़े उत्साह से आयोजित किये जाते रहे है।

प्रबंधन: श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर का कार्य संचालन समाज सदस्यों द्वारा निर्वाचित कार्यकारिणी द्वारा होता है। समाज का अपना विधान है जिसका सन् 1960 में 'राज.संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958' के अन्तर्गत पंजीयन कराया गया। इसका पंजीयन कराया गया। इसका पंजीयन क्रमांक 60/1960–61 है। वर्तमान विधान के अनुसार कार्यकारिणी समिति सदस्यों में 1 निर्वाचित अध्यक्ष, 90 चयनित एवं 2 पदेन सदस्य होगें। जिनका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। जिसमें वृद्धि नही होगी।

महेश सेवा कोष: महेश सेवा कोष से उन माहेश्वरी सदस्यों को जिनके परिवार की समिति द्वारा तत्समय निर्धारित मासिक आय अथवा उससे कम है, सहायता की जा सकती है। महेश सेवा कोष द्वारा निम्नानुसार सहायता दी जा सकती है :–

(अ) मासिक सहायता– विधवा बहनों एवं वृद्ध सदस्यों को, जिनकी आय का कोई भी साधन नहीं है, सेवा कोष से समिति द्वारा वर्तमान में निर्धारित राशि प्रतिमाह भरण पोषण हेतु सहयोग राशि दी जा सकती है।

(ब) चिकित्सा सहायता– महेश अस्पताल एवं सरकारी अस्पताल में चिकित्सा पर (निजि चिकित्सालयों में नही) औषधियों, शल्य–चिकित्सा एवं अन्य जाँचों (समाज द्वारा संचालित डायग्नोस्टिक सेन्टर में अधिकृत अस्पताल के परामर्श करायी गई जांचें सम्मिलित) हेतु समिति द्वारा वर्तमान में निर्धारित राषि वार्षिक तक के चिकित्सा बिलों का पुनर्भरण किया जा सकता है। उन बिलों का भुगतान जो दो माह पूर्व के होंगे भुगतान योग्य नहीं है।

(स) शिक्षा सहायता– उन परिवारों को जिनकी आय का कोई साधन नहीं है, विद्यालय फीस हेतु समिति द्वारा वर्तमान में निर्धारित राषि की वार्षिक सहायता दी जा सकती है (प्रति बालक/बालिका अधिकतम दो बच्चों हेतु)।

(द) शिक्षा प्रोत्साहन– जिन परिवारों की आय का कोई साधन नहीं है, के बच्चों को उच्च शिक्षा में व्यवधान न हो इस हेतु

समिति द्वारा तत्समय में निर्धारित मासिक प्रोत्साहन राशि दी जा सकेगी। इस प्रोत्साहन राशि की समय सीमा यू.जी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त इंजिनियरिंग कॉलेज हेतु 4 वर्ष, मेडीकल कॉलेज हेतु 5 वर्ष एवं सी.ए. इस्टीट्यूट हेतु 3 वर्ष तक दी जा सकेगी।

समाज बंधुओं द्वारा स्थापित स्थायी कोषों की सूची सलंग्न है। स्थायी कोष स्थापित करने वाले समाज बंधु बधाई के पात्र है।

समाज कोष– समाज द्वारा स्थापित इस कोष में विवाह के मांगलिक अवसर पर समाज बंधुओं द्वारा आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है।

समाज को प्राप्त दान राशि पर दानदाताओं को आयकर अधिनियम में छूट – भारत सरकार के आयकर आयुक्त कार्यालय, जयपुर प्रथम के परिपत्र संख्या आ.आ.प्रथम/80–जी/60/6–09–10/74 दिनांक 17.04.2009 के तहत श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर को दी जाने वाली राशि पर धारा 80जी के अन्तर्गत छूट है।

वस्तुभण्डार– वस्तु भंडार की शाखाएँ माहेश्वरी विद्यालय भवन, तिलक नगर व माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल, विद्याधर नगर में संचालित की जा रही है। भण्डार में शादी विवाह तथा अन्य अवसरों पर आयोजित भोज में काम आने वाले सभी प्रकार के के बर्तन उपलब्ध है। इस सामाजिक सेवा का समाज बंधुओं द्वारा भरपूर उपयोग हो रहा है।

विवाह प्रकोष्ठ– माहेश्वरी समाज, जयपुर के महेश मैरिज ब्यूरों के माध्यम से समाज के विवाह योग्य युवक–युवतियों के बायोडेटा संकलित कर परिचय स्मारिका एवं कम्प्यूटर द्वारा वांछित जानकारियाँ समाज बंधुओं को प्रदान की जाती है। प्रत्येक कार्यदिवस को ब्यूरो का कार्यालय दोपहर 12.00 से सायं 7.00 बजे तक खुला रहता है। समय–समय पर परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाहों का सफल आयोजन किया जाता रहा है।

महेश अस्पताल– महेश अस्पताल का मुख्य संरक्षक श्री माहेश्वरी समा, जयपुर है। इस अस्पताल में इंडोर एवं आउटडोर मरीजों का अनुभवी चिकित्सकों की देखरेख में इलाज हो रहा है।

पत्रिका प्रकाशन– श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर द्वारा संचालित सामाजिक, शैक्षणिक व अन्य गतिविधियों की जानकारी समाज सदस्यों को पहुँचाने हेतु **'जयपुर माहेश्वरी पत्रिका'** का प्रकाशन श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर की देखरेख में किया जा रहा है। पत्रिका नियमित रूप से प्रतिमाह प्रकाशित की जा रही है।

वार्षिकोत्सव– श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर को वार्षिकोत्सव हर वर्ष **'सूर्य सप्तमी'** को मनाया जाता हैं व महामंत्री द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन प्रेषित किया जाता है। इसी अवसर पर **'प्रतिभा सम्मान'** में खेलकूद, शैक्षणिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, चिकित्सा आदि क्षेत्रों की समाज की प्रतिभाओं को स्वर्ण पदक पहनाकर एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया जाता है।

होली स्नेह मिलन समारोह– रंग एवं स्नेह के पर्व होली के उपलक्ष्य में होली स्नेह मिलन समारोह भी हर वर्ष सफलतापूर्वक आयोजित किया जाता है।

महेश नवमी महोत्सव– महेशन नवमी के अवसर पर श्री महेश भगवान की शोभायात्रा निकाली जाती है। शोभा यात्रा में केसरिया परिधान में सुसज्जित महिलाएँ तथा सफेद धोती कुर्ता व केसरिया दुपट्टा धारण किये पुरुष भव्य लवाजमा एवं बैण्ड की धुनों के साथ भजन गाते हुए चलते हैं। मुख्य कार्यक्रम स्थल पर भक्ति संगीत के कार्यक्रम के साथ भोजन प्रसादी का भी आयोजन किया जाता है।

सामूहिक गोठ एवं महेश मेला– हर वर्ष सावन–भादों में श्री माहेश्वरी विद्यालय, तिलक नगर प्रांगण में सामूहिक गोठ एवं महेश मेले का आयोजन किया जाता रहा है। जिसमें विशाल उपस्थित के बीच समाज बंधु भाग लेकर लेने व भोजन प्रसादी (दाल, बाटी, चूरमा) का आनन्द प्राप्त करते है। मेले में खान–पान व खेलकूद आदि की अनेक स्टॉले लगाई जाती है एवं मनोरंजन के कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जाते है।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह– हर वर्ष दीपावली स्नेह मिलन समारोह के अन्तर्गत भक्ति संगीत तथा अन्नकूट प्रसादी का आयोजन किया जाता है, जिसमें स्वजातीय बंधुगण एक जगह एकत्रित होकर आपस में दीपावली की शुभकामनाएँ प्रदान करते है।

साधारण सभा – प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में साधारण सभा का आयोजन कर वर्ष पर्यन्त किए गए कार्यों की जानकारी एवं भविष्य में किए जाने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा सभा में रखना तथा सभा में उपस्थित सदस्यों से सामाजिक विचार विमर्श करना। इस सभा हेतु कोरम की बाध्यता नही होगी। ऐसी सभा में किसी प्रकार का निर्णय नहीं लिया जा सकेगा।

अन्य सेवा कार्य – श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के अन्तर्गत एवं इसकी संरक्षकता में निम्न संस्थाओं के माध्यम से सेवा

कार्य किया जा रहे हैं–

दी एज्यूकेशन कमेटी ऑव् दी माहेश्वरी समाज (सोसायट), जयपुर

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के अन्तर्गत दी एज्यूकेशन कमेटी आव् दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी), जयपुर राजस्थान सोसाइटीज एक्ट 1860 के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था है। इसके पंजीयन क्रमांक 96/1956–57 हैं। इसके वर्तमान में श्री प्रदीप बाहेती, अध्यक्ष एवं श्री नटवर लाल अजमेरा महासचिव शिक्षा व श्री नटवर कुमार सारड़ा (सीए.) कोषाध्यक्ष हैं।

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर द्वारा संचालित विद्यालय, महाविद्यालय एवं छात्रावास

श्री माहेश्वरी उच्च माध्यमिक विद्यालय

विजय पथ, तिलक नगर, जयपुर (msh)

फोन नं.– 0141–2620541, 2624400, 92144–12129, 92143–12129

E-mail : jaipurmhs@yahoo.com, Website : www.mhsjaipur.com

सन् 1936 में स्थापित यह विद्यालय वर्तमान में तिलक नगर, जयपुर में संचालित है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर से स्थायी मान्यता प्राप्त इस विद्यालय में कक्षा 6 से 12 तक हिन्द माध्यम एवं कक्षा 1 से 12 अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। कक्षा 11 व 12 में विज्ञान एवं वाणिजय संकाय है। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री अशोक कुमार फलोड़** व भवन मंत्री **श्री अजय नोवाल** है।

माहेश्वरी पब्लिक स्कूल

सेक्टर-4, जवाहर नगर, जयपुर (mps Jawhar Nagar)

फोन नं.– 0141–2653552, 2651854, फैक्स नं.– 91–141–2650127

E-mail : mpsjaipur@gmail.com, Website : www.mpsjaipur.com

दिनांक 16 जुलाई 1977 को स्थापित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर जयपुर, जो केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली से सम्बद्ध है, जिसमें कक्षा 1 से 12 तक अंग्रेजी माध्यम से षिक्षा प्रदान की जा रही है। कक्षा 11 व 12 में विज्ञान व वाणिज्य संकाय है। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री कमल सोमानी** व भवन मंत्री **सीए. संजय बांगड़** है।

माहेश्वरी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यलाय

सिंघी जी का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर (mbv)

फोन नं.– 0141–2313072, 2314646,

E-mail : mbvbalika@yahoo.com

सन् 1984 के एक शुभ प्रभात में शिक्षा क्षेत्र के दृढ़ संकल्प और आस्था के साथ स्थापित यह बालिका विद्यालय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर से सीनियर सैकण्डरी स्तर एक स्थायी मान्यता प्राप्त हैं। इस विद्यालय में कक्षा 1 से 12 तक छात्राओं के लिए अंग्रेजी माध्यम एवं कक्षा 6 से 12 तक हिन्दी माध्यम में शिक्षा दी जाती है। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री द्वारका दास मालू** व भवन मंत्री **श्री अनिल कचौलिया** है।

माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल

सेक्टर-1, विद्याधर नगर, जयपुर (mgps)

फोन नं.– 0141–2236571, 2236588, फैक्स नं.– 0141–2236573

E-mail : mgpsjaipur@gmail.com, Website : www.mgps.in

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर एवं सोसाइटी ने शैक्षिक क्षेत्र में अपनी दूरदर्शिता के साथ शिक्षा के बदलते आयामों को दृष्टि में रखते हुए अपने राष्ट्र की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप शैक्षणिक नवाचारों से युक्त माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल, विद्याधर नगर, जयपुर का दिनांक 18 अप्रेल, 2001 को शुभारम्भ किया। यह विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली से सम्बद्ध है, जिसमें कक्षा 1 से 12 तक अंग्रेजी माध्यम से छात्राओं को शिक्षा प्रदान की जा रही है। कक्षा 11 व 12 में विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय है। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री मुरारी लाल बिड़ला** व भवन मंत्री **कमलेश लढ्ढ़ा** है।

माहेश्वरी पब्लिक स्कूल

सेक्टर-5(विस्तार), प्रताप नगर, जयपुर (mps Pratap Nagar)

फोन नं.– 0141–2770658, 2771358, फैक्स नं.– 91–0141–2770657

E-mail : mpspnjpr@gmail.com, Website : www.mpspnjpr.com

दिनांक 28 अप्रेल, 2008 को स्थापित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, प्रताप नगर, जयपुर में कक्षा 1 से 12 तक अंग्रेजी माध्यम से छात्र–छात्राओं को शिक्षा प्रदान की जा रही है। यह विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली से सम्बद्ध है। यहाँ कक्षा 11 व 12 में विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय है। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री मुकेश राठी** व भवन मंत्री **श्री अशोक अजमेरा (सीताबाडी)** है।

माहेश्वरी पब्लिक स्कूल इन्टरनेशनल

भाभा मार्ग, तिलक नगर, (mps International)

फोन नं.– 0141–2620629

E-mail : mpsinternationaljaipur@gmail.com

सत्र 2014 में स्थापित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल इन्टरनेशनल, भाभा मार्ग, तिलक नगर को राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। कक्षा 1 से 9 तक अंग्रेजी माध्यम से सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। सत्र 2014 से विद्यालय को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिलली से सम्बद्ध की कार्यवाही जारी है। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री निर्मल दरगड़** व भवन मंत्री **श्री भवानी शंकर बाहेती** है।

माहेश्वरी पब्लिक स्कूल

एस.पी.एल.-224, रिको इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, बगरू (विस्तार), जयपुर (mps Bagru)

फोन नं.– 0141–21685534, 21658535

E-mail : mpsbagru@gmail.com, Website : www.mpsbagru.com

सत्र 2014 में स्थापित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल में कक्षा 1 से 12 तक अंग्रेजी माध्यम द्वारा सफलता पूर्वक संचालन किया जा रहा है। सत्र 2015 से विद्यालय को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली से सम्बद्धता के साथ कक्षा 12 तक के लिये मान्यता प्राप्त हो चुकी है। सत्र 2016–17 से प्री–प्राइमरी कक्षाएँ प्रारम्भ की गई है। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री श्याम सुन्दर तोतला** व भवन मंत्री **श्री सुरेन्द्र काबरा** है।

माहेश्वरी पब्लिक स्कूल

सुशान्त सिटी के पास, कालवाड रोड़, जयपुर (mps Kalwar Road)

फोन नं.– 9412949000

E-mail : mpskrjaipur@gmail.com, Website : www.mpskalwarroad.com

दिनांक 1 मई 2018 से CBSE पाठ्यक्रम की अंग्रेजी माध्यम व सह षिक्षा के अन्तर्गत कक्षा 1 से 9 तक अंग्रेजी माध्यम से सफलता पूर्वक संचालन किया जा रहा है। शैक्षणिक सत्र 2019–20 से प्री–प्राइमरी कक्षाएँ प्रारम्भ की जा रही है। विद्यालय को 9वीं कक्षा के लिए CBSE द्वारा मान्यता प्रदान की जा चुकी है। विद्यालय के मानद् सचिव **श्री मनोज कुमार बिड़ला** व भवन मंत्री **श्री मनीष सोमानी** है।

एम.पी.एस. संस्कृति प्री-प्राईमरी स्कूल,

तुलसी मार्ग, बनीपार्क, जयपुर (mps Sanskriti)

फोन नं.– 0141–2203340, 2203341, 7414020004

E-mail : mpssanskriti@ecmsjaipur.com, Website : www.mpssanskriti.com

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के तत्वाधान में दी एज्यूकेषन कमेटी ऑव् दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी), जयपुर ने अभिभावकों की माँग व जन भावनाओं के अनुरूप Pre Primary School की प्रथम शाखा mps-Sanskriti का शुभारम्भ 9 जुलाई, 2018 को तुलसी मार्ग, बनीपार्क, जयपुर में किया गया है। यह कैम्पस अत्साधुनिक साज सज्जा व विश्वस्तरिय टैक्नोलोजी से युक्त हैं। इन बच्चों को भविष्य के सुसंस्कारवान नागरिक बनाने की नीवँ यहाँ डाली जा रही हैं। विद्यालय के संचालन हेतु सोसायटी संचालन समिति का गठन किया गया है। वर्तमान में विद्यालय के शिक्षा सचिव **श्री संजय काबरा** व भवन मंत्री **श्री गिरधर झंवर** है।

माहेश्वरी कॉलेज ऑव् कॉमर्स एण्ड ऑर्ट्स

सेक्टर-5(विस्तार), प्रताप नगर, जयपुर (mcca)
फोन नं.– 0141–2770147, 2770148
E-mail : mcca.jaipur2010@gmail.com, Website : www.mccajaipur.com

जयपुर में दी एज्यूकेशन कमेटी ऑव् दी माहेश्वरी समाज सोसायटी के अन्तर्गत छात्राओं के लिये दिनांक 13 जुलाई 2010 को कॉलेज का विधिवत लोकार्पण हुआ। इस महाविद्यालय का अंग्रेजी माध्यम से छात्राओं को आधुनिक एवं परम्परागत जीवन एवं समाज मूल्यों के साथ उच्च षिक्षा देने का लक्ष्य है। महाविद्यालय में कॉमर्स एण्ड आर्टस संकाय के साथ बी.बी.ए. संकाय सत्र 2010–11 से प्रारम्भ किया गया है, जिसकी राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त की गई। सत्र 2013–14 से राजस्थान विष्वविद्यालय से स्कानोत्तर में कॉमर्स एण्ड आर्ट्स संकाय की मान्यता प्राप्त कर कॉलेज में एम.ए. एवं एम.कॉम की कक्षाएँ प्रारम्भ की गई। कॉलेज द्वारा विश्व की सुप्रसिद्व केम्ब्रीज विश्वविद्यालय, युके द्वारा संचालित **Business English Communication Course** के लिये मान्यता प्राप्त की गई एवं प्रतिवर्ष शत प्रतिशत परीक्षा परीणाम कॉलेज को प्राप्त होता आया है। इस कोर्स की उच्चतम शिक्षण प्रक्रिया हेतु कॉलेज को 3 वर्षो तक **International Institute Award** प्राप्त हुआ। वर्तमान में विद्यालय के मानद् सचिव **श्री कैलाश चन्द अजमेरा** व भवन मंत्री **श्री सुनील मालपानी** है।

सोसायटी द्वारा संचालित माहेश्वरी गर्ल्स हॉस्टल छात्राओं के लिये राजस्थान में ऐसा पहला छात्रावास है, जिसमे 51 ए.सी. एवं नॉन ए.सी. सुसज्जित कमरे हैं। जिसमें 100 छात्राओं के रहने की आद्युनिकतम सुसज्जित व्यवस्था है। छात्रावास में जिम, पुस्तकालय, स्टेनलेस स्टील रसोई घर, इन्डोर एवं आउट डोर गेम्स, विजिटर्स लॉबी की व्यवस्था की गई है। छात्रावास का एरिया लगभग 30,000 स्क्वायर फिट है। माहेश्वरी गर्ल्स हॉस्टल के संयोजक **श्री सांवरमल परवाल** है।

I B Board (International Baccalaureate) विद्यालय हेतु ऐतिहासिक निर्णय :

सोसायटी द्वारा लिए गए ऐतिहासिक निर्णय की अनुपालना में आई.बी.बोर्ड की मान्यता हेतु आवेदन मय मान्यता शुल्क आवदेन प्रस्तुत किया गया। विद्यालय का नाम mps-The Global School तय किया गया है। विद्यालय को आई.बी. बोर्ड के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त हो चुकी है, जिसके अन्तर्गत आगामी शिक्षा सत्र 2020–21 से कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ किया जाएगा। आई.बी. बोर्ड विद्यालय के लिए आवश्यक भूमि चिन्हित करने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री माहेश्वरी नवयुवक मण्डल, जयपुर :

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के अन्तर्गत सन् 1961 से माहेश्वरी युवकों की उन्नति के निमित्त सेवा, सहयोग, संगठन एवं सुधार कार्य करते हुए जनसमुदाय की सेवा में संलग्न है।

हर वर्ष महेश मेले का भार श्री माहेश्वरी नवयुवक मण्डल, जयपुर बखूभी निभाता है। समय–समय पर विशाल रक्तदान शिविर एवं निःशुल्क चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन भी करता है। हर वर्ष डांडिया रास एवं **MPL** (माहेश्वरी प्रीमियर ली का आयोजन व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी मण्डल करवाता रहा है। वर्तमान में मण्डल अध्यक्ष **श्री आशीष मंत्री** (गणगौर बेसन) व सचिव **श्री अकित काबरा** है।

श्री माहेश्वरी महिला परिषद्, जयपुर :

श्री माहेश्वरी महिला परिषद्, जयपुर का उद्देश्य समाज की महिलाओं में जागृति लाना, सामाजिक अभिरूचि प्रदान करना एवं सामाजिक बुराईयों एवं कुरूतियों को समाप्त करना है। परिषद् द्वारा स्थापित केनिंग सेन्टर पर शर्बत, जैम, जैली, मुरब्बा, सॉस आदि शुद्धता से तैयार करवाये जाते हैं तथा सिलाई बुनाई केन्द्र में वर्षपर्यन्त सिलाई, बुनाई, पेटिंग, मेहन्दी व अन्य हॉबी क्लासेज चलती रहती है। माहेश्वरी महिलाओं के लिए गणगौर एवं तीज पर सामूहिक उजरने के साथ–साथ तीर्थ स्थलों का भ्रमण भी करवाया जाता है।

परिषद् की पिकनिक, साज–सज्जा प्रतियोगिता, खेलकूद, विभिन्न विषयों पर वार्ता आयोजन पर आपसी मेल जोल बढ़ाने में योगदान देती है। संस्कार शिविर आदि भी आयोजित किये जाते है। वर्तमान में परिषद् अध्यक्ष **श्रीमती रजनी माहेश्वरी** व सचिव **श्रीमती स्नेहलता साबू** है।

''उत्सव'' श्री माहेश्वरी समाज जनोपयोगी भवन

(अन्तर्गत : श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर)

पी-10, सेक्टर-2, विद्याधर नगर, जयपुर

फोन नं.– 0141–2236743–44–67 फैक्स नं. : 0141–2236745

E-mail : utsavjaipur@yahoo.com, Website : www.utsavjaipur.com

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर शिक्षा के क्षेत्र में जयपुर में ख्याति प्राप्त संस्थाओं को स्थापित व कुशलतापूर्वक संचालित करने के साथ सामाजिक व मांगलिक कार्यो को आयोजित करने के लिए सम्पूर्ण आधुनिक सुविधायुक्त भवन उपलब्ध कराने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कई वर्षो से प्रयासरत था। अन्त में वर्ष 2003 में राज्य सरकार द्वारा जनोपयोगी भवन के निर्माण के लिए 5000 वर्गमीटर का भूखण्ड श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर को आवंटित किया गया।

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के सभी माहेश्वरी बंधु उच्च स्तर के भवन का निर्माण के लिये कृत संकल्प थे। वर्ष 2007 में उच्च सुविधायुक्त भवन का निर्माण पूर्ण कर समाज की सेवा में समर्पित कर दिया गया।

सत्र 2012–15 में भूतल पर बनी हुई रसोईयों की छत का उपयोग करते हुए प्रथम तल पर 5400 वर्गफुट का वातानुकूलित हॉल, साथ में रसोई व द्वितीय तल पर 8 डबल बैड व 2 चार बैड के वातानुकूलित शयनकक्ष और तृतीय तल पर 6 बैउ की वातानुकूलित डोरमेट्री निर्माण कराया गया है। पूर्ण भवन में कुल डबल बैड के 48, 4 बैड के–12, 9 बैड की डोरमेट्री–4, 8 बैड डोरमेट्री–2 व 6 बैड की डोरमेट्री–एक है। ब्लॉक 'ए' व 'बी' को एक साथ बुक कराने वाले उपयोगकर्ता के अतिथियों की सुविधा को ध्यान में रखकर दोनों भवनों को आपस में जोड़ दिया गया है।

''कृष्णधाम'' वृद्धाश्रम

(अन्तर्गत : श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर)

पी-10, सेक्टर-2, विद्याधर नगर, जयपुर, फोन नं. 0141-2230389

E-mail : shrimaheshwarisamaj.jaipur@gmail.com

कृष्णाधाम वृद्धाश्रम बुजुर्गो के लिए समाज की ओर से एक अनुपम सौगात है। यहाँ वृद्धजन अपना शेष जीवन यापन कर रहे हैं। यहाँ रहने वालों के दिल में यह अनुभूति हुई है कि हमने समाज पर विश्वास करके अपना जीवन सुखमय बनाया है जहाँ हमें शान्ति के साथ जीवन के अंतिम पड़ाव में आनन्द मिल रहा है। आश्रमवासियों को पौष्टिक आहार के साथ वे सब सुविधाएँ यहाँ दी जाती हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है।

सर्दियो में च्यवनप्राश, दूध व तिल के व्यंजन दिये जाते हैं एवं गर्मियों में इसी प्रकार ठण्डे पेय दिये जाते हैं। उपचार की व्यवस्था एवं निःशुल्क दवाईयाँ उपलब्ध है। आश्रम में 47 व्यक्तियों के रहने की व्यवस्था है, जिनमें से इस समय ..... वृद्धजन निवास कर रहे है। आश्रम में द्वितीय तल पर 15 कमरों का निर्माण दानदाताओं के सहयोग से पूर्ण हो गया है। जो सभी आवश्यक सुविधाओं से परिपूर्ण हैं। आश्रम में वे सभी भौतिक व आध्यात्मिक साधन उपलब्ध हैं जिनकी निवासियों को आवश्यकता है। सेवा के लिए पूर्णकालीन रसोईयाँ तथा सफाईकर्मी, व्यवस्थापक एवं अन्य सुविधाओं के लिए एक कर्मी कार्यरत है। वर्तमान कार्यकारिणी के समय में आश्रम सभी मूलभूत आवश्यकताओं ओत–प्रोत है। वर्तमान में आश्रम के संयोजक श्री मालचन्द (राधेश्याम) बाहेती है।

आश्रम में सहयोग देने एवं निवास हेतु दूरभाष नं. 0141–2230389 एवं मोबाईल नं. 9829461340 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

''अभिनन्दन'' श्री माहेश्वरी समाज जनोपयोगी भवन

(अन्तर्गत : श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर)
रामसिंहपुरा, धौलाई, वी.टी. रोड़ के सामने, मानसरोवर, जयपुर
E-mail : abhinandanmansarover@gmail.com

श्री माहेश्वरी समाज जयपुर की विभिन्न सामाजिक व शिक्षण संस्थाओ की कडियों में एक संस्था और शामिल हो गयी है जिसका नाम ''अभिनन्दन जनोपयोगी भवन'' है। एशिया की सबसे बड़ी कॉलोनी मानसरोवर मे स्थित यह भवन गुलाबी नगरी में अपनी अलग पहचान बना चुका है है। श्री बजरंग लाल बाहेती, श्री सुभाष सिंघी एवं श्री विमल सिंघी के अथक प्रयासों से भूरूपान्तरण करवाकर एवं जे.डी.ए. से भवन के नक्शे पास कराकर 1 जनवरी 2015 से निर्माण कार्य शुरू किया गया था। जिसे मार्च 2018 को अभिनन्दन भवन निर्माण समिति के सहयोग से पूरा कराकर दिनांक 16 जून 2018 को गणेश स्थापना, वास्तु पूजा व मांगलिक प्रवेश के साथ दिनांक 21 अक्टूबर 2018 को श्री राजेन्द्र जी मूंदडा के द्वारा लोकार्पण कराया गया। 'अभिनन्दन' भवन मे 62 कमरें, 8 डोरमेट्री (लेट–बाथ सहित), 1 बड़ा बैंक्वेट हाल, स्टिल्ट फ्लोर पर बैंक्वेट हाल, 2 मिनी बैंक्वेंट हाल, 2 डायनिंग हॉल, 4 छोटे किचन, 2 बड़े किचन, 2 पैसेंजर लिफ्ट, 1 लोडिंग लिफ्ट, व डबल बेसमेन्ट पार्किंग की व्यवस्था है। भवन में मेजेनाइन फ्लोर पर ऑफिस ब्लॉक व मुख्य स्टोर बना हुआ है। प्रत्येक फ्लोर पर भी स्टोर बने हुये है। भवन में पॉवर बेकअप के लिये 400 के.वी. का जेनरेटर भी लगा हुआ है। पूर्णतः वातानुकूलित भवन में वेले पार्किंग की सुविधा भी उपलब्ध है। भवन में नवम्बर 2018 से नवम्बर 2019 तक लगभग 180 मांगलिक व धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हो चुके है। अभिनन्दन भवन हेतु तदर्थ समिति गठित है जिसके चेयरमैन–**श्री बजरंग लाल बाहेती**, सचिव–**श्री बिहारी लाल साबू** हैं।

माहेश्वरी जाति की शाखाएँ

1. आगसूड

आगरोजी तंवर से आगसूड कहलाये

गौत्र कस्यप – माता जाखण

1.आगसूड

2.आगीवाल

आगोजी भाटी से आगीवाल कहलाये

गौत्र चन्द्रांस – माता भेसांद

1.आगीवाल

3.अजमेरा

अजोजी चुहाण से अजमेरा कहलाये

गौत्र मानांस – माता नौसर

1.अजमेरा 2.कौडया 3.कुलथ्या 4.कूकड़या
5.राय 6.रणदीता 7.घौल 8.घौलसया 9.भगत
10.भगूत्या 11.डवकोडया 12.डोडा 13.मानक्या
14.विन्यायक्या 15.नौसरया 16.पोसरया
17.खरड 18.खुच्या 19.पढावां

4.असावा

आसपालजी दहिया से आसावा कहलाये

गौत्र पचांस – माता आसावरी

1.असावा 2.व्यपती 3.नाग 4.मंडोवरा

5.अटल

अटलसिंह जी गहलोत से अटल कहलाये

गौत्र गोतमस्या – माता संचाय

1.अटल 2. गोठणीवाल 3.मरौठिया

6.बाहेती

बैहडसिंहजी निरवाण से बाहेती कहलाये

गौत्र भिन्न–भिन्न – माता भिन्न–भिन्न

इसके बहुत से नख हो गये हैं और इनमें गौत्र भी अलग–अलग है।
माता भी अलग–अलग है

1.बाहेती 2.रूवंधा 3.नाडगढ़ 4.लीकासाण्या
5.आम्रपाल 6.बेडचीवाल 7. रूया 8.चरखा 9.रूडया 10.सिंघडीया
11.तुमडिया 12.झतिरिया 13.राधाणी 14.बाधाणी 15.सेसाणी 16.सकराणी
17.गोदाणी 18.रामाणी 19.वुगतल 20.बबलौता 21. लोइबाल
22. बरोत्या 23. बेडीवाल 24.रूधा 25.खडलोया
26.कसेड़ा 27.सहरा 28.हमीरपुरा 29.जंगी 30.धनोला
31.गोकन्या 32.डाल्या 33.डांगरा 34.मल्लड़ 35.लोगरड 36.लोहिया
37.लोया 38.मुरक्या 39.लटूरिया 40.धगरा 41.खावाणी
42.धोल 43.घूणवाल 44.मुसाणिया 45.नावधराणी 46.नरवरा
47.बील्या 48.वद्दा 49.बीलाद्दा 50.बाघला 51.खीविज्या
52.निविज्या 53.नागणच्या 54.राईवाल 55.बूब
56.गांधी 57.खुवंडा 58.वासाणी 59.आगसुंड
60.सुम 61.गरविया 62.धनाणी 63.रूहडा
64.मालीवाल 65.नावधरा 66.मालाण्या 67.धनड
68.मुलतानी 69.संल्तांण 70.तुरक्या 71.सुतुडिया
72.नरेड़्या 73.नथड 74.गींदोडिया 75.तापड़ा
76.राणा 77.धराणी 78.धीराणी 79.मीयाणी
80.दुराणी 81.मोराणी 82.धाराणी 83.मल
84.मनाणी 85.स्याहरा 86.राय दरगड़
87.फूमड़ा 88.नोगजा

7.बजाज

बीजोजी भाटी से बजाज कहलाये

गौत्र भंसाली – माता गाहल, मरचुन्या का गौत्र आवलेंस

1.बजाज 2.बेहडया 3.रोल्या 4.रामाबत
5.मरचुन्या 6.चामर 7.धारूका 8.गवदूका
9.गटूका 10.गोदावत 11.गांधा
12.लखावत 13.किस्तुरिया

8.बलदुआ

वाघोजी पंवार से बलदुआ कहलाये

गौत्र बलांस– माता गांगेवमेश व हींगलाद

1.बलदुआ 2.पडवार 3.पेडीवाल 4.राघवाणी
5.कलाणी 6.वेडीवाल

9.बालदी

बालोजी बडगूजर से बालदी कहलाये

गौत्र लौरस – माता गारस

1.बालदी

10.बंग

बाघसिंह जी पडिहार से बंग कहलाये

गौत्र सोढ़ांस – माता खांडल

1.बंग 2.छीतरका 3.सांवलका 4.सोभावत
5.थारावत 6.पंसारी 7.पटवारी 8.मोटावत

11.बांगरड़ (बांगड़)

बाधसिंह जी बडगूजर से बांगरड़ कहलाये

गौत्र चूडांस – माता संचाय

1.बागरड 2.तापड़िया 3.बांगड़

12.भन्डारी

भण्डलसिंहजी कछावा से भण्डारी कहलाये

गौत्र कौसिक – माता नागणेच्या

1.भण्डारी 2.भकावा 3.भुक्या 4.काला 5.गोरा
6.गोकन्या 7.गुलचक 8.मान्या
9.लाठी 10.राय 11.मिरच्या
12.नरेसणया 13.नेणसर

13.भनसाली

भाउसिंह जी बांस से भनसाली कहलाये

गौत्र भनसाली – माता चावडा

1.भनसाली

14.भट्टड

भेरूजी भाटी से भट्टड कहलाये

गौत्र भटयांस – माता बींसल, सभी मूदल

1.भट्टड 2.सुंधा 3.लदड़ 4.हलद 5.केला
6.कहरा 7.बीसाणी 8.बीसा 9.बलवाणी 10.बिच्छू
11.रामाणी 12.जेठा 13.गांधी 14.पीकाणी 15.पूगलिया
16.भल्लड़ 17.मूहणदासोत 18.महरा

15.भुराडिया

भुरसिंह जी चुहाण से भुराडिया कहलाये

गौत्र अचित्र – माता माणाधणी

1.भुराड़िया 2.कोठारी 3.बंबू 4.भुगड़या

16.भूतड़ा

भूरसिंह जी सांखला से भूतड़ा कहलाये

गौत्र अत्लसांस – माता खींवज

1.भूतड़ा 2.चाच्या 3.देवगटाणी
4.देवदताणी 5.चौधरी

17.बिदादा

व्रधसिंह जी सोढा से बिदादा कहलाये

गौत्र गजांस – माता पाढाय

1.बिदादा 2.किल्लल

18.बिहाणी

बिहारी जी पंवार से बिहाणी कहलाये

गौत्र बालांस – माता संचाय

1.बिहाणी 2.सराफ 3.लोहिया 4.पीहाणी 5.बछाणी 6.पीठाणी 7.गुजरका 8.वडहका 9.लालाणी 10.पंसारी 11.लौईका 12.पापडया 13.गोबरिया

19.बिड़ला

बेहड़सिंह जी पंवार से बिड़ला कहलाये

गौत्र बालांस – माता संचाय

1.बिड़ला 2.धूरया 3.गाठया 4.धूबरया 5.गरूरया 6.गौरया 7.बड़ालिया

20.बूब

बाघोजी पंवार से बूब कहलाये

गौत्र मूसाइस – माता भद्रकालि

1.बूब 2.बौरधा

21.चांडक

चांपसिंह जी चुहाण से चांडक कहलाये

गौत्र चन्द्रांस – माता संचाय आसपूरा

गौत्र बछाईस – माता देल 'पुंगलिया'

1.चांडक 2.गौराणी 3.मुलतानी 4.मुकनाणी 5.मीमाणी 6.माधाणी 7.प्रगाणी 8.प्रहलादाणी 9.पुंगलिया 10.पटवा 11.बीझाणी 12.भीषाणी 13.भइया 14.सागर 15.साँवल 16.सुखाणी 17.सुन्दराणी 18.जोगड

22.छापरवाल

छाजपाल जी सांखला से छापरवाल कहलाये

गौत्र कौसिक – माता बंधर

1.छापरवाल 2.दुजारां 3.दुसाज

23.चेचाणी

चन्द्रसैण जी दहीया से चेचाणी कहलाये

गौत्र सीलांस – माता दधवन्त

1.चेचाणी 2.दूदाणी 3.कचौल्या 4.कलक्या 5.राय 6.खड

24.चोखड़ा

चोखसिंह जी सींदल से चोखड़ा कहलाये

गौत्र चन्द्रांस – माता जींवण

1.चोखड़ा

25.डाड

डुंगाजी दहिया से डाड कहलाये

गौत्र आमरांस – माता भद्रकाली

1.डाड 2.थेपडया 3.डांडरया

26.डागा

डूंगोजी पंवार से डागा कहलाये

गौत्र राजहंस – माता संचाय

1.डागा 2.डूंडा 3.करनाणी 4.केसावत 5.कान्हाणी 6.भोजाणी 7.बिठाणी 8.गौराणी 9.दमाणी 10.दरावरया 11.न्हार 12.मेण्या 13.मुकनाणी 14.मजीठया 15.माधाणी 16.मड़िया 17.मोड 18.मांडा 19.कानाणी

27.दरक

दुरगसिंह जी खीची से दरक कहलाये

गौत्र हरिद्रांस – माता मूसा

1.दरक 2.हलद्या 3.मरचून्या 4.कोठारी 5.चौधरी

28.देवपुरा

दीपोजी दहिया से देवपुरा कहलाये

गौत्र पारस – माता पाढाय

1.देवपुरा 2.कंसुबीवाला

29.धूत

धूरसिंह जी धांधल से धूत कहलाये

गौत्र फाफडास – माता लींकासण

1.धूत

30.धूपड़

धीर सिंह जी धांधल से धूपड़ कहलाये

गौत्र सिरसेस – माता फलौधी

1.धूपड़

31.पलौड (फलोड़)

पालौजी पड़िहार से पलौड कहलाये

गौत्र साडांस – माता चावंडा

इनके माता अलग–अलग मानते है।

1.पलौड 2.चितलांगिया 3.रावत्या 4.लोंसल्या 5.जुजेसरया 6.गहलड़ा 7.पचीस्या 8.चावडया 9.काकन्य 10.भुकड़ 11.केला 12.सेठी 13.चावटा 14.मौडा 15.फोगीवाल 16.जैथल्या 17.वापडोता 18.डोंडया 19.मुजीवाल 20.मारू 21.फौसल्या

32.गादइया

गोरोजी गोयल से गदइया कहलाये

गौत्र गोरास – माता वंधर

1.गदइया 2.चौधरी 3.हीगरड

33.गगराणी

गंगासिंह जी गहलोत से गगराणी कहलाये

गौत्र कस्य – माता पाढाय

डोडया गौत्र अम्रांस – माता बागलेश्वरी

ववरेच्या गौत्र कपलास – माता बागलोद

1.गगराणी 2.गगड़ 3.वावेच्या 4.डोडया 5.काला 6.गहेया

34. गट्टाणी

गटूजी गहलोत से गट्टाणी कहलाये

गौत्र ढालांस – माता चावंडा

1.गट्टाणी 2.मल्लक 3.टोपीवाला 4.साकरिया 5.संकर 6.मिलका

35.गिलड़ा

गागजी गहलोत से गिलड़ा कहलाये

गौत्र गोतमस्य – माता मात्री

1.गिलड़ा 2.गहलड़ा 3.गोगल 4.मूथा 5.मोदी

36.हेडा

हीरोजी देवड़ा से हेडा कहलाये

गौत्र धनास – माता फालोदी

1.हेडा

37.हुरकट

हीरोजी देवडा से हुरकट कहलाये

गौत्र कश्यप – माता विस्वत

1.हुरकट 2.भोलाणी 3.कयाल 4.चौधरी

38.इनाणी

इन्द्रसिंह जी इन्दा से इनाणी कहलाये

गौत्र ससांस – माता जैसल

1.इनाणी 2.नगवाडया

39.जाजू

जूजाजी सांखला से जाजू कहलाये, समरजी से समदाणी कहलाये

गौत्र बालांस – माता फलोधी

1.जाजू 2.समदाणी 3.सिंगी 4.तुलावटया 5.कयाल 6.जज नौत्या

40.जाखेटिया

जालमसिंह जी यादव से जाखेटिया कहलाये

गौत्र सीलांस – माता सिसणाय

1.जाखेटिया 2.हौलाणी 3.भुवानीवाल

41.झंवर

जाजणजी से झंवर कहलाये

गौत्र झुम्रांस – माता सुन्द्रासण

गौत्र माणंस – माता नांगला खरड

गौत्र मोवणांस – माता झालरिया खरड

1.झंवर 2.गाहलवाल 3.नागला 4.नौसरया 5.पौसरया 6.खरड 7.खुच्या 8.खीवज्या 9.ठींगा 10.मुवाणी 11.मीवण्या 12.मेमाणी 13.झालरिया 14.भगत 15.डाणी 16.चौधरी 17.सोमानी झंवर

42.काबरा

कूंभो जी गहलोत से काबरा कहलाये

गौत्र अचित्रांस – माता सुसमाद

1.काबरा 2.मांडम्यां 3.पालडया 4.अठारया 5.भगत 6.सिंगी 7.घौल 8.कोठारी 9.माणम्या

43.कचौल्या

कंवरसिंह जी तंवर से कचौल्या कहलाये

गौत्र सीलांस – माता पढाय

1.कचौल्या 2.राय 3.सौन 4.फूल 5.रूप 6.नवीरा

44.काहल्या

काहोजी कछावा से काहल्या कहलाये

गौत्र का कागायंस – माता लींकासण

1.काहल्या 2.चहाडका 3.बहाडका

45.कालाणी

कलौजी कछाबा से कालाणी कहलाये

गौत्र धौलांस व कालांस – माता चावंडा

1.कालाणी 2.मुरक्या 3.कलंत्री 4.गठाणी 5.कुलथ्य

46.कलंत्री

कालूजी कछावा से कलंत्री कहलाये

गौत्र कस्यप – माता चावंडा व चमलाय व पाढाय

1.कलंत्री 2.मच्छर

47.कांकाणी

कूकसिंह जी जौया से कांकाणी कहलाये

गौत्र कपलांस व गौतमस्य – माता आमल

1.कांकाणी 2.सांभरया 3.नाराणीवाल 4.चोढया

नोटः– साभरया की माता लोसल

48.करवा

कंवरसिंह जी कछावा से करवा कहलाये

गौत्र करवांस – माता संचाय व कछवाय

1.करवा 2.काग्या 3.काहोर 4.कोया 5.किलल व कलंकी

49.कासट

केवाट जी पडिहार से कासट कहलाये

गौत्र अत्लसांस – माता संचाय व चानण

1.कासट 2.कटसूरा 3.सुरजन 4.खोगटा

50.खटवड़ (खटोड़)

खडगलसिंह जी सांखला से खटवड कहलाये

गौत्र कांगांस – माता पाढाय नोसला – फलौदी

गौत्र मूगांस निरमलांस

1.खटवड़ 2.मालाणी 3.मौलासरया 4.तोडा 5.मुछाल 6.टुवाणी 7.लोथा 8.खड़ 9.काल्या 10.लौसल्या 11.गांधी 12.गहलड़ा 13.नरेसन्या 14.सराफ 15.पहाड़का 16.भूतिया 17.भूरिया 18.भाला

51.लढ़ा

लोहडसिंह जी पवार से लढ़ा कहलाये

गौत्र सीलांस – माता संचाय

1.लढ़ा 2.मोदी 3.मूंजी 4.अठासण्य 5.भाकरोधा 6.हींग्या 7.दगडा 8.दागडया 9.धाराणी 10.जोला 11.चौधरी

52.लाहोटी

लाभदेव जी तंवर से लाहोटी कहलाये

गौत्र कागांस – माता चावंडा

1.लाहोटी 2.विसहर 3.कूया 4.काहा

53.लखोटिया

लोकसिंह जी पंवार से लखोटिया कहलाये

गौत्र फाफडांस – माता संचाय

1.लखोटिया 2.जुगरामा 3.भइया 4.मौठडया 5.मौनाण 6.परसराम 7.राइस

54.मालू

मल्लोजी पंवार से मालू कहलाये

गौत्र खलांस व थेवडांस – माता संचाय

1.मालू 2.साबू 3.घीया 4.तेला 5.चौधरी 6.लोइबाल

55.मालपाणी

मालदे जी भाटी से मालपाणी कहलाये

गौत्र भटयांस – माता सांगल

1.मालपाणी 2.मूथा 3.मोदी 4.जूंहरी 5.लूलाणी 6.लौलण 7.भूरा

56.माणधाणया

मोवणसिंह जी मोहिल से माणधण्या कहलाये

गौत्र जेसलानी – माता माणुधणी

1.माणुधण्या 2.माणुधणा 3.चौधरी 4.स्याहर 5.धरडोल्या 6.सूम 7.सिंगी 8.हीरा

57.मंडोवरा

माडो जी पड़िहार से मंडोवरा कहलाये

गौत्र बछांस – माता धौलेसरी रूई

1.मंडोवरा 2.मातेसरया 3.धौलेसरिया 4.केसासरिया 5.तेला

58.मणियार

मोवणजी मोहील से मणियार कहलाये

गौत्र कौसिक – माता दायमा

1.मणियार 2.पसारी 3.बरधू 4.माइयां 5.खरनाल्या 6.मनक्या

59.मन्त्री

मानोजी पंवार से मन्त्री कहलाये

चोपड़ा ओसवाल से मित्रता के कारणी मंत्री बने

गौत्र कंवलाय – माता संचाय

1.मंत्री

60.मोदाणी

माधोजी मोहील से मोदाणी कहलाये

गौत्र साडांस – माता चावंडा

1.मोदाणा 2.वंव 3.मोदी 4.महदाणा 5.महनाण

विशेष : वंशोत्पत्ति के बाद निम्न
पांच खांचे फिर बनी

61.मूंधड़ा

माधोसिंह जी मोहिल से मूंधडा कहलाये

गौत्र गोंबांस – माता मूंदल

1.मूंधड़ा 2.मोराणी 3.मोदी 4.माहलाणा
5.सेसाणी 6.सांभरया 7.सकराणी 8.भाकराणी
9.भराणी 10.भौराणी 11.राजमहूता 12.गौराणी
13.ऊलाणी 14.डोडया 15.ढ़ेयया 16.चौधरी
17.चमडया 18.चमक्या 19.अटेरण्या 20.प्रहलादाणी
21.पंसारी 22.छोटा पंसारी 23.कोठारी 24.बारीफा
25.बावरी 26.बलडिया 27.दम्मलका 28.अठाणी
29.गबलाणी 30.अलडिया

62.नावंधर

नवनीत सिंह जी नीरवाण से नावंधर कहलाये

गौत्र वुग्दालिभ – माता धरजल

1.नावधर 2.धराणी 3.धीरणी 4.धाराणी
5.धीरण 6.ढुढाणी 7.मौडाणी 8.मीमाणी
9.धनाणी 10.पनाणी 11.स्याहरा
12.राय 13.गांधी

63.नवाल

नानणसिंह जी नृबाण से नवाल कहलाये

गौत्र नानणांस – माता नवासण

1.नवल 2.खुवांल 3.मालीवाल

64.नौलखा

नोलसिंह जी यादव से नौलखा कहलाये

जैन धर्म छोड़ कर माहेश्वरी बने गौत्र कस्यप माता पाढाय

1.नौलखा 2.नौगजा

65.न्याती

नारायाणासिंह जी निरवाणा से न्याती कहलाये

गौत्र नाँन सैण – माता चांद सैण

1.न्याती 2.निकलंक 3.फोफलिया 4.डन्डी

66.परताणी

पूरोजी पंवार से परताणी कहलाये

गौत्र कस्यप – माता संचाय

1.परताणी 2.पूंदपाल्या 3.दागडया 4.पनपालिया

67.पोरवार

पुरौजी पडिहार से पोरवार कहलाये

गौत्र नानांस – माता भद्रकाली

1.पोरवार 2.परवाद 3.दागडया

68.राठी

रिड़मलजी पंवार से राठी कहलाये

गौत्र कपलांस – माता संचाय

1.श्री चन्डाणी 2.साल्हाणी 3.सांवताणी
4.सांगाणी 5.सादाणी 6.सतलाणी 7.साहताणी
8.साहणी 9.सालगाणी 10.समाण 11.सुखाणी
12.सुखेदवाणी 13.सुजाणी 14.सिहाणी 15.करनाणी
16.कलाणी 17.क्रमसाणी 18.कौकाणी 19.खेताणी 20.खेमाणी
21.गवलाणी 22.गिरधराणी 23.गागाणी 24.गेगणी 25.गोमलाणी
26.गोयदाणी 27.गौपालाणी 28.गुलवाणी 29.चौथाणी 30.चौखाणी
31.चतुरभुजाणी 32.चापसाणी 33.जटाणी 34.जसवाणी 35.जैसाणी
36.जालाणी 37.जिदाणी 38.जीवाणी 39.जौधाणी 40.तहनाणी
41.तेजाणी 42.तुलछाणी 43.तिरथाणी 44.दम्माणी 45.दसवाणी
46.देशवाणी 47.देवराजणी 48.देवगटाणी 49.डुढणी
50.द्वारकाणी 51.धनाणी 52.धामाणी 53.नथाणी
54.नेताणी 55.नापाणी 56.नाटाणी 57.नानगाणी 58.पदाणी
59.पीपाणी 60.वहगटाणी 61.बेखटाणी 62.बनाणी 63.बिन्नाणी
64.बसदेबाणी 65.बाघाणी 66.विसताणी 67.वछाणी
68.भाकराणी 69. भौलाणी 70.भोजाणी 71.ठाकुराणी
72.महराठाकुराणी 73.मथराणी 74.मदवाणी 75.माधाणी
76.मालाणी 77.मेहसराणी 78.मुलाणी 79.मुलतोणी
80.मुजाणी 81.मीमाणी 82.अरजनाणी 83.आफाणी
84.उघाणी 85.रधाणी 86.रतनाणी 87.राधाणी 88.रूपाणी
89.हरकाणी 90.मुहलाणी 91.लखाणी 92.लखवाणी
93.लालाणी 94.लूलाणी 95.लुहजाणी
96.श्रीचंदोत 97.करम चंदोत 98.कपूर चंदोत
99.राम चंदोत 100.लाल चंदोत 101.प्रतिचंदोत
102.मान सिंगोत 103.फते सिंगोत
104.राम सिंगोत 105.अखे सिंगोत 106.करम सोत
107.नेत सोत 108.चतुर भुभोत 109.मद सुदनौत
110.धगडावत 111.मानावत 112.खेतावत
113.दुदावत 114.देवावत 115.पूरावत 116.टीवावत
117.कल्लावत 118.मल्लावत 119.मौलावत
120.रामावत 121.लखावत 122. भिचलाती
123.भांग चन्दोत 124.मूथा 125.डौड मूथा
126.कहरा 127.थहरा 128.बाजरा 129.बेजारा
130.मीचेरा 131.बगरा 132.लाखासरिया 133.बरसलपूरिया
134.कोठारी 135.चौधरी 136.रूडया 137.राहूडया
138.मड़िया 139.लेखणिया 140.फाफट 141.बेकट
142.भइया 143.सुणां 144.सहाणा 145.मोदीया
146.गांदी 147.इन्दु 148.सराफ 149.साहा 150.सिरचा
151.कल्हा 152.ब्रजवासी 153.साबलका 154.खटमल
155.वापल 156.बाबेचा 157.मरोठी
158.करमा 159.राठी 160.मोहता

69.सारड़ा

सीहड़जी चौहान से सारड़ा कहलाये
(कुछ लोग सीहड़जी को भूल से पंवार मानते है)

गौत्र थेवडांस – माता संचाय

1.सारड़ा 2.नरड़ 3.खरड़ 4.केला 5.मूजीबाल
6.कोठारी 7.कानूगो 8.चौधरी 9.भलीका
10.पटवा 11.दादल्या 12.भागड़या
13.रामदेव 14.सेठ 15.सेठी

70.सिकची

संकरजी पंवार से सिकची कहलाये

गौत्र कस्यप – माता संचाय

1.सिकची 2.सीलार 3.सीलाणी

71.सोढ़ाणी

सीडोजी सोहड से सोढ़ाणी कहलाये

गौत्र सोढांस – माता झींण

1.सोढाणी 2.दंताल 3.ढोली
4.डाखेड़ा 5.हड़कुटिया

72.सोमानी

श्यामोजी सोलंखी से सोमानी कहलाये

गौत्र लियाइंस – बंधर

1.सोमानी 2.ओसापा 3.राय 4.कोडयाका

5.कुदाल 6.मरदा 7.मानाणी 8.कयाल 9.पांत्या
10.मक्कड़ 11.शाहा 12.बागड़ी 13.परसावत
14.बालेपोता 15.ज्ञानेपोता 16.गेनाणी
17.कसेरा 18.थीराणी 19.खाडावाला
20.झंवर सोमाणी

73.सोनी

सोनोजी सोनगरा से सोनी कहलाये

गौत्र धूम्रांस – माता सेवल्या

1.सोनी 2.सुगरा 3.नुगरा 4.रामावत
5.भानावत 6.कोठारी

74.तापड़िया

तेजपाल जी चुहाणा से तापड़िया कहलाये

गौत्र पीपलांस – माता आसपुरा वींपालान

1.तापड़िया 2.छाछया 3.मूंगरड

75. तोषनीवाल

तेजसिंहजी चुहाण से तोषनीवाल कहलाये

गौत्र कौसिक – माता खूखर

1.तोषनीवाल 2.नागौरी 3.मिज्याजी 4.मोदी
5.मूंजी 6.डामा 7.नेवर 8.डामडी
9.लम्बू 10.सिंगी 11.दास 12.दगा
13.झालरिया 14.जेनारिया 15.भकरोद्या

76.तोतला

तोलोजी चुहाण से तोतला कहलाये

गौत्र कपिलांस – माता खूंखर

1.तोतला 2.बडहका 3.नागला
4.पटवारी 5.तेला

77.टावरी

हमीर जी झालसे टावरिया जी से टावरी कहलाये

गौत्र माकरण – माता चावंडा

1.टावरी 2.गौराणी 3.भकराईस 4.भोजाणी
5.गुरकाणी 6.खेताणी 7.मोहता